दिनांक :- 07-मई-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- मौर्योत्तर काल स्त्रोत (समाज)

इस समय भारतीय समाज में अनेक परिवर्तनों को रेखांकित किया जा सकता है इन परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले निम्नांकित कारक थे।

① विदेशियों का आगमन
② शूद्रों की कृषि में भागीदारी से सम्पन्नता
③ समाज में जन जातीय तत्वों का आत्मसाती करण।

उस समय कारीगर अधिकतर शूद्र वर्ण से आते थे

Scanned with CamScanner

तथा उनके धन एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई फिर भी मनु द्वारा शूद्रों के लिये कठोर नियम रखे गये तथा यह कहा गया कि शूद्रों का मुख्य कार्य ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना है।

इस काल में भारतीय समाज में विदेशी तत्वों की उपस्थिति काफी बढ़ गई। अब विदेशियों की उपेक्षा म्लेच्छ कह कर बहुत अधिक दिनों तक नहीं की जा सकती थी। अतः उन्हें निम्न स्तर के क्षत्रिय का दर्जा दिया गया। बृहद योग में जहाँ वर्ण संकरों की संख्या 12 थी वहाँ इस काल में मनुस्मृति में इसकी संख्या 64 बताई गई है। विदेशी लोगों के आने से जो एक सामाजिक तनाव उत्पन्न हुआ उसका एक समाधान वर्ण संकर की परिकल्पना में देखी जा सकती थी।

सामाजिक तनाव का एक पक्ष यह भी था जिसे पुराणों में कलियुग कहा गया है। यह तनाव वैश्यों तथा शूद्रों के द्वारा विरोध की भावना से उत्पन्न हुआ। मनु ने तो यहाँ तक कह दिया है कि जब तक इन लोगों ने डंडे से दबाया नहीं जाता तब तक काम नहीं चलेगा। ऐसा लगता है कि विद्रोह का एक महत्वपूर्ण रूप राज्य कर का न देना था। स्पष्टतः इससे समाज में एक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। हो सकता है कि इस स्थिति से निबटने के लिए राजाओं ने भूमि दान को प्रोत्साहित किया। महाभारत के एक अन्य प्रसंग में जाति के सिद्धान्त का प्रारंभ मिलता है। भीष्म कहते हैं कि यज्ञ के लिए प्रजापति ने चार वर्णों की सृष्टि की। सभी वर्णों के लोगों को अपने वर्ण के लोगों से एक वर्ण नीचे के लोगों के साथ विवाह की अनुमति दी गई परंतु उससे उत्पन्न संतान

का वर्ण पिता के वर्ण के अनुसार होगा। किंतु यदि माता का वर्ण पिता के वर्ण से अधिक नीचा हो तो संतान का वर्ण माता के वर्ण के अनुसार हो जायेगा मनु के अनुसार ब्रह्मा में चार वर्णों की सृष्टि की और उनके अलग-अलग कर्तव्य निश्चित किए। जाति शब्द का प्रयोग प्रतिलोम विवाह के लिए हुआ मनु के अनुसार वेदों को पढ़ाना ब्राह्मण का मुख्य कर्तव्य है। रक्षा करना क्षत्रिय का और व्यापार करना वैश्यों का कर्तव्य है। मनु विपत्ति के समय ब्राह्मण और क्षत्रिय को वैश्य का व्यवसाय की अनुमति देते है। परंतु उच्च वर्ण का व्यवसाय नहीं अपनाया जा सकता है।

मनु के विपत्ति के समय निर्वाह के लिए 10 ऐसे व्यवसाय बताते है जो सभी वर्णों के लोग कर सकते है

Scanned with CamScanner

① अध्ययन ② शिल्पकर्म ③ मजदूरी ④ सेवा
⑤ पशुपालन ⑥ व्यापार ⑦ कृषि ⑧ संतोष
⑨ भिक्षा ⑩ ब्याज लेना

मनु के अनुसार समाज में ब्राह्मण की स्थिति श्रेष्ठ थी उन्होंने लिखा है कि ब्रह्मव्रत के ब्राह्मण, बंग और आंध्र के ब्राह्मणों से ज्यादा श्रेष्ठ है। मनु के अनुसार ब्राह्मणों को प्राणदंड की सजा नहीं दी जा सकती है। ब्राह्मणों के लिए शूद्र का भोजन वर्जित कर दिया गया। हाला कि मनु शूद्र अध्यापकों की चर्चा करते है, फिर भी उनकी दृष्टि से शूद्र और दास में कोई अन्तर नहीं था। मनु ने कहा कि स्नातकों को शूद्रों के साथ यात्रा नहीं करनी चाहिए। यद्यपि मिलिन्दपन्हो से ज्ञात होता है कि शूद्रों को भी वैश्यों की तरह कृषि, व्यवसाय एवं पशुपालन की शिक्षा दी जाती है।

Scanned with CamScanner

मनु ने 7 प्रकार के दासो का उल्लेख किया है।
नारियो को अच्छी शिक्षा प्राप्त होती थी। समाज तथा
परिवार मे उसे सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। पवित्र
ग्रंथो का आयु पर्यन्त अध्ययन करने वाली महिला ब्रह्म
वादी कहलाती थी जबकि विवाह तक ही अध्ययन
करने वाली महिला सद्योद्वाह कहलाती थी। याज्ञ
वल्क्य ने उत्तराधिकार के संबंध मे वरीयता सूची
निर्धारित की है जिसमे पुत्रो के तत्काल बाद पत्नी
तथा पुत्रियो का स्थान है।
मनु के अनुसार विधवा विवाह की अनुमति नही थी और
नही विधवा को संपत्ति मे अधिकार था।
मनु ने कई परिस्थितियो मे पत्नी के परित्याग की भी
अनुमति दी। वे परिस्थितियाँ है। अगर वह संतान को
जन्म न दे सके तो 8 वर्षो के बाद परित्याग कर सकते है।

अगर उसकी संतान जीवित न रहे तो 10 वर्षों के बाद केवल पुत्री को जन्म देने की स्थिति में उसे 11 वर्ष में परित्याग कर सकता छोड़ा जा सकता है।

विदेशियों के एकीकरण करने के लिए वर्ण संस्कार की अवधारणा की अतिरिक्त धर्म की भी सहायता ली गयी विदेशियों के एकीकरण का समर्थन प्राप्त करने के लिए विभिन्न धर्मों में एक प्रकार की होड़ लग गई मनु स्मृति में कहा गया कि धार्मिक संस्कारों और ब्राह्मणों की अवहेलना के कारण विदेशियों की सामाजिक स्थिति गिर गई। भगवत पुराण में कहा गया है कि अगर ये जातियाँ विष्णु पूजन करती है तो पुनः यह पवित्र हो जाएगी। महक्षत्रप सोडास के समय एक अभिलेख में वासुदेव के एक मंदिर के प्रवेश द्वार और उसके वेदिका के निर्माण का उल्लेख है। कुषाण शासक भी वैष्णव एवं शैव प्रभाव से अछूत नहीं रहे।

Scanned with CamScanner